

○ 14 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

]] 1]] होमवर्क (Marks: 5*4=20)

>>> *सवेरे सवेरे उठ सारी दुनिया को शांति और सुख का दान दिया ?*

>>> *आकारी और निराकारी स्थिति के अभ्यास द्वारा हलचल में भी अचल रहे ?*

>>> *दिव्य गुणों की प्राप्ति का अनुभव किया ?*

>>> *बाबा के निस्वार्थ प्यार का अनुभव किया ?*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

⊙ *तपस्वी जीवन* ⊙

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ °

~◇ *जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मार्ये अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान कर सकती हैं,* अल्पकाल के साधनों द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, *तो परमात्म शक्ति अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती परन्तु इसके लिए विशेष एकाग्रता का अभ्यास चाहिए।*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ● ☆ ● ◇ °

॥ 2 ॥ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➤➤ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

☼ *श्रेष्ठ स्वमान* ☼

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

☼ *"मैं समर्थ बाप और समर्थ युग की स्मृति द्वारा व्यर्थ को समाप्त करने वाली समर्थ आत्मा हूँ"*

~◊ सदा अपने को समर्थ आत्माएं समझकर चलते हो? जब सर्वशक्तिवान की स्मृति है तो स्वतः समर्थ हो। समर्थ आत्मा की निशानी क्या होगी? *जहाँ समर्थी है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त हो जाता है। समर्थ आत्मा अर्थात् व्यर्थ से किनारा करने वाले। संकल्प में भी व्यर्थ नहीं। ऐसे समर्थ बाप के बच्चे सदा समर्थ।*

~◊ आधा कल्प तो व्यर्थ सोचा, व्यर्थ किया-अब संगमयुग है समर्थ युग। समर्थ युग, समर्थ बाप और समर्थ आत्माएं। तो व्यर्थ समाप्त हो गया ना। *सदा यह स्मृति में रखो कि हम समर्थ युग के वासी, समर्थ बाप के बच्चे, समर्थ आत्मा हैं। जैसा समय, जैसा बाप वैसे बच्चे।*

~◊ *कलियुग है व्यर्थ। जब कलियुग का किनारा कर चुके, संगमयुगी बन गये तो व्यर्थ से किनारा हो ही गया। तो सिर्फ समय की याद रहे तो समय के प्रमाण स्वतः कर्म चलेंगे।*

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

॥ 3 ॥ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➤➤ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

☉ *रुहानी ड्रिल प्रति* ☉

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°●●☆●●◊°°

~◊ यह पक्का है कि हम फरिश्ते हैं? 'फरिश्ता भव' का वरदान सभी को मिला हुआ है? *एक सेकण्ड में फरिश्ता अर्थात डबल लाइट बन सकते हो?* एक सेकण्ड में, मिनट में नहीं, 10 सेकण्ड में नहीं, एक सेकण्ड में सोचा और बना, ऐसा अभ्यास है? अच्छा जो एक सेकण्ड में बन सकते हैं, दो सेकण्ड नहीं, एक सेकण्ड में बन सकते हैं, वह एक हाथ की ताली बजाओ।

~◊ बन सकते हैं? ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। डबल फारेनर नहीं उठा रहे हैं। टाइम लगता है क्या? अच्छा जो समझते हैं कि थोड़ा टाइम लगता है, एक सेकण्ड में नहीं, थोड़ा टाइम लगता है, वह हाथ उठाओ। (बहुतों ने हाथ उठाया) अच्छा है, लेकिन *लास्ट घड़ी का पेपर एक सेकण्ड में आना है, फिर क्या करेंगे?*

~◊ *अचानक आना है और सेकण्ड का आना है।* हाथ उठाया, कोई हर्जा नहीं। महसूस किया, यह भी बहुत अच्छा। परंतु *यह अभ्यास करना ही है। करना ही पड़ेगा, नहीं, करना ही है।* यह अभ्यास बहुत-बहुत-बहुत आवश्यक है। चलो फिर भी बापदादा कुछ टाइम देते हैं। कितना टाइम चाहिए? दो हजार तक चाहिए।

◊ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ °

॥ 4 ॥ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➤➤ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

◊ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ °

◊ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ °

☼ *साइलेंस पाँवर प्रति* ☼

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

◊ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ ° ● ☆ ● ✧ °

~ ✧ *अन्तिम पुरुषार्थ याद का ही है।* इसलिए याद की स्टेज वा अनुभव को भी बुद्धि में स्पष्ट समझना आवश्यक है। बिन्दु रूप की स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है, दोनों का अनुभव क्या-क्या है? क्योंकि नाम दो कहते हैं तो जरूर दोनों के अनुभव में भी अन्तर होगा। चलते-फिरते बिन्दु रूप की स्थिति इस समय कम भी नहीं लेकिन ना के बराबर ही कहें। इसका भी अभ्यास करना चाहिए। *बीच-बीच में एक दो मिनट भी निकाल कर इस बिन्दी रूप की प्रैक्टिस करनी चाहिए।* जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो सारे चलते-फिरते हुए ट्रैफिक को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। सारे चलते हुए कार्य को स्टॉप कर लेते हैं।

~ ✧ *आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए।* एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। *अगर यह प्रैक्टिस नहीं करेंगे तो बिन्दु रूप की पावर फुल स्टेज कैसे और कब ला सकेंगे?* इसलिए यह अभ्यास करना आवश्यक है।

~ ✧ बीच-बीच में यह प्रैक्टिस प्रैक्टिकल में करते रहेंगे तो जो आज यह बिन्दु रूप की स्थिति मश्किल लगती है वह ऐसे सरल हो जायेगी जैसे अभी

मैजारिटी को अव्यक्त स्थिति सहज लगती है। पहले जब अभ्यास शुरू किया तो व्यक्त में अव्यक्त स्थिति में रहना भी मुश्किल लगता था। *अभी अव्यक्त स्थिति में रह कार्य करना जैसे सरल होता जा रहा है वैसे ही यह बिन्दुरूप की स्थिति भी सहज हो जायेगी।* अभी महारथियों को यह प्रैक्टिस करनी चाहिए।



]] 5]] अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

>> *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*



]] 6]] बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✽ *"ड्रिल :- अशरीरी बन घर जाना है इसलिए तन से ममत्व निकाल देना"*

» _ » इस धरा पर भगवान ने उतरकर अपनी मुलाकातो का खुबसूरत महल मधुबन सजाया... उसी पावन महल की कुटिया में बेठी में आत्मा बाबा की यादों में खोयी हुई... अपने महान भाग्य को मन की आँखों से निहार रही हूँ... *जिसने ईश्वर को मनमीत बनाकर जीवन को सुखो की सेज बना डाला... इन्ही यादों की तन्द्रा मीठे बच्चे की आवाज से टूट गयी... और पलके उठाकर जो निहारा तो... मीठे बाबा सामने है, और बड़े प्यार से मेरी ओर देख रहे हैं...*

✽ *प्यारे बाबा मुझे ज्ञान रत्नों की बहारों से भरते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मात्र यह शरीर नहीं निराली प्यारी आत्मा हो... अपने खुबसूरत मणि रूप के नशे से भर जाओ... *ईश्वरीय यादों में, देह के आकर्षण से मुक्त होकर... अशरीरी अवस्था को मजबूत बनाओ..*. बार बार इसका अभ्यास करो तो

सहज हो जायेगा..."

»→ _ »→ *मैं आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान वचनों को सुनकर आनन्द से भर गयी और बोली :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... श्रीमत के साये से कितने जनमों दूर रही... और देह न होकर भी देह के भान से सदा घिरी रही... *अब जो सत्य का सूरज जीवन को प्रकाशित कर रहा है.*.. मैं आत्मा हर पल इस सत्य रौशनी में चमक रही हूँ..."

* *मीठे बाबा मेरे भाग्य की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हुए बोले :-* "सिकीलधे प्यारे बच्चे... संगम के इस खूबसूरत वरदानी समय को हर पल अपनी आत्मिक उन्नति में लगाओ... जो हो बस उसमें ही रम जाओ... *झूठे आवरण को त्यागकर, अपने दमकते स्वरूप को प्रतिपल यादों में उभारो.*.. अब घर चलने के समय खुद को कहीं भी न उलझाओ..."

»→ _ »→ *मैं आत्मा मीठे बाबा को टीचर रूप में देख देख मन्त्रमुग्ध हूँ और कहती हूँ :-* "मेरे मीठे लाडले बाबा... देह के आवरण को सत्य समझ, मैं आत्मा कितनी बेसमझ हो गयी थी... *आपने मेरे वजूद को पुनः याद दिलाकर मुझे अनोखी खुशी से सजा दिया है.*.. अब झूठ से मैं आत्मा सदा की मुक्त हूँ और सत्य राहों का राही बनकर मुस्करा रही हूँ..."

* *प्यारे बाबा श्रीमत पर मेरे अटूट निश्चय को देख कर मुस्करा उठे और समझाते हुए कहने लगे :-* "मीठे प्यारे बच्चे... भाग्य ने जो ईश्वर पिता के हाथों में थमाया है... और खूबसूरत भविष्य सजाया है... तो श्रीमत को दिल से अपनाकर अपने खूबसूरत लक्ष्य की ओर बढ़ो... *अपनी अशरीरी स्थिति को इस कदर द्रढ़ कर लो कि कोई भी बात हिला न सके.*..

»→ _ »→ *मैं आत्मा मीठी मुस्कान से मीठे बाबा को सहमति देते हुए कहती हूँ :-* "ओ सच्चे सच्चे बाबा मेरे... आपने सत्यता भरा हाथ मुझ आत्मा को थमाकर अनोखा जादु कर दिया है... *आत्मिक सुंदरता से सजाकर मुझे बेशकीमती बना दिया है.*.. इस देह के मटमैले पन को आपकी मीठी यादों में सहज ही धो

रही हूँ... ऐसा कह अपने प्यार बाबा को दिल में लिए... मैं आत्मा अपने कार्य स्थल में आ गयी..."

॥ 7 ॥ योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

☀ * "ड्रिल :- देह सहित पुरानी दुनिया के सम्बन्धी आदि सब भूल स्वयं को देही समझना है*"

☞ _ ☞ → एकान्त में बैठी एक दृश्य में इमर्ज करती हूँ और इस दृश्य में एक बहुत बड़े दर्पण के सामने स्वयं को निहारते हुए अपने आप से मैं सवाल करती हूँ कि मैं कौन हूँ ! *क्या इन आँखों से जैसा मैं स्वयं को देख रही हूँ मेरा वास्तविक स्वरूप क्या सच में वैसा ही है! अपने आप से यह सवाल पूछते - पूछते मैं उस दर्पण में फिर से जैसे ही स्वयं को देखती हूँ, दर्पण में एक और दृश्य मुझे दिखाई देता है इस दृश्य में मुझे मेरा मृत शरीर दिखाई दे रहा है जो जमीन पर पड़ा है*। थोड़ी ही देर में कुछ मनुष्य वहाँ आते हैं और उस मृत शरीर को उठा कर ले जाते हैं और उसका दाह संस्कार कर देते हैं।

☞ _ ☞ → इस दृश्य को देख मैं मन ही मन विचार करती हूँ कि शरीर के किसी भी अंग में छोटा सा कांटा भी कभी चुभ जाता था तो मुझे कष्ट होता था। लेकिन अभी तो इस शरीर को जलाया जा रहा है फिर भी इसे कोई कष्ट क्यों नहीं हो रहा! *इसका अर्थ है कि इस शरीर के अंदर कोई शक्ति है और जब तक वो चैतन्य शक्ति शरीर में है तब तक यह शरीर जीवित है और हर दुख - सुख का आभास करता है लेकिन वो चैतन्य शक्ति जैसे ही इस शरीर को छोड़ इससे बाहर निकल जाती है ये शरीर मृत हो जाता है*। फिर किसी भी तरह का कोई एहसास उसे नहीं होता। अपने हर सवाल का जवाब अब मुझे मिल चुका है।

☞ _ ☞ → "मैं कौन हूँ" की पहली सलझते ही अब मैं उस चैतन्य शक्ति अपने

निज स्वरूप को मन बुद्धि के दिव्य नेत्र से देख रही हूँ जो शरीर रूपी रथ पर विराजमान होकर रथी बन उसे चला रही है। *स्वराज्य अधिकारी बन मन रूपी घोड़े की लगाम को अपने हाथ में थामते ही मैं अनुभव करती हूँ कि मैं आत्मा रथी अपनी मर्जी से जैसे चाहूँ वैसे इस शरीर रूपी रथ को चला सकती हूँ*। यह अनुभूति मुझे सेकण्ड में देही अभिमानी स्थिति में स्थित कर देती है और इस स्थिति में स्थित होकर मैं स्वयं को सहज ही देह से न्यारा अनुभव करते हुए बड़ी आसानी से देह रूपी रथ का आधार छोड़ इस रथ से बाहर आ जाती हूँ।

»→ _ »→ अपने शरीर रूपी रथ से बाहर आकर अब मैं इस देह और इससे जुड़ी हर चीज को बिल्कुल साक्षी होकर देख रही हूँ जैसे मेरा इनसे कोई सम्बन्ध ही नहीं। *किसी भी तरह का कोई भी आकर्षण या लगाव अब मुझे इस देह के प्रति अनुभव नहीं हो रहा, बल्कि एक बहुत ही न्यारी और प्यारी बन्धनमुक्त स्थिति में मैं स्थित हूँ जो पूरी तरह से लाइट है और उमंग उत्साह के पंख लगाकर ऊपर उड़ने के लिए तैयार है*। इस डबल लाइट देही अभिमानी स्थिति में स्थित मैं आत्मा ऐसा अनुभव कर रही हूँ जैसे मेरे शिव पिता के प्यार की मैग्नेटिक पावर मुझे ऊपर अपनी ओर खींच रही है। *अपने प्यारे पिता के प्रेम की लग्न में मग्न मैं आत्मा अपने विदेही पिता के समान विदेही बन, देह की दुनिया को छोड़ अब ऊपर आकाश की ओर जा रही हूँ*।

»→ _ »→ परमधाम से अपने ऊपर पड़ रही उनके अविनाशी प्रेम की मीठी - मीठी फुहारों का आनन्द लेती हुई मैं साकार लोक और सूक्ष्म लोक को पार करके, अति शीघ्र पहुँच जाती हूँ अपने शिव परम पिता परमात्मा के पास उनके निराकारी लोक में। *आत्माओं की ऐसी दुनिया, जहाँ देह और देह की दुनिया का संकल्प मात्र भी नहीं, ऐसी चैतन्य मणियों की दुनिया में मैं स्वयं को देख रही हूँ*। चारों ओर चमकते हुए चैतन्य सितारे और उनके बीच में अत्यंत तेजोमय एक ज्योतिपुंज जो अपनी सर्वशक्तियों से पूरे परमधाम को प्रकाशित करता हुआ दिखाई दे रहा है।

»→ _ »→ उस महाज्योति अपने शिव परम पिता परमात्मा से निकलने वाली सर्वशक्तियों की अनन्त किरणों की मीठी फुहारों का भरपूर आनन्द लेने और उनकी सर्वशक्तियों से स्वयं को शक्तिशाली बनाने के लिए मैं निराकार ज्योति

धीरे - धीरे उनके समीप जाती हूँ और उनकी सर्वशक्तियों की किरणों की छत्रछाया के नीचे जा कर बैठ जाती हूँ। *अपने प्यारे पिता के सानिध्य में बैठ, उनके प्रेम से, उनके गुणों और उनकी शक्तियों से स्वयं को भरपूर करके अब मैं आत्माओं की निराकारी दुनिया से नीचे वापिस साकारी दुनिया में लौट आती हूँ*।

»→ _ »→ कर्म करने के लिए फिर से अपने शरीर रूपी रथ पर आकर मैं विराजमान हो जाती हूँ किन्तु अब मैं सदैव इस स्मृति में रह हर कर्म करती हूँ कि मैं आत्मा इस देह में रथी हूँ। *इस स्मृति को पक्का कर, कर्म करते हुए भी स्वयं को देह से बिल्कुल न्यारी आत्मा अनुभव करते हुए, देही अभिमानी बनने का अभ्यास मैं बार - बार करती रहती हूँ*।

]] 8]] श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

* *मैं आकारी और निराकारी स्थिति के अभ्यास द्वारा हलचल में भी अचल रहने वाली आत्मा हूँ।*

* *मैं बाप समान आत्मा हूँ।*

➤➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

]] 9]] श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

* *मैं आत्मा दिव्य गुणों की प्राप्ति होते अनुभव करती हूँ ।*

* *मैं आत्मा सबसे श्रेष्ठ प्रभु प्रसाद प्राप्त करती हूँ ।*

* *मैं आत्मा दिव्य गुणमूर्त हूँ ।*

➤ ➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 10 ॥ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✽ अव्यक्त बापदादा :-

➤ ➤ 1. *इस समय आप हर एक को, आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मन्सा सेवा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे।* दाता बनो, रहमदिल बनो। चिल्ला रहे हैं। बाप के आगे अपनी-अपनी भाषा में चिल्ला रहे हैं - शान्ति दो, स्नेह दो, दिल का प्यार दो, सुख की किरणें दिखाओ। तो बाप कैसे देंगे? आप बच्चों द्वारा ही देंगे ना! *बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो। कोई को कुछ भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा ही देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना!*

➤ ➤ 2. तो अभी बाप राइट हैण्डस द्वारा आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली तो दिलायेंगे ना! बिचारों को अंचली भी नहीं देंगे तो कितने तड़पेंगे। *अभी सभी हृद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हृद की बातों में, हृद के संस्कारों में समय नहीं गँवाओ।*

✽ *ड्रिल :- "बाप का राइट हैण्ड रहमदिल बनना"*

➤ ➤ ज्ञान सूर्य बाबा की संतान में आत्मा मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ... *बाबा के दिये ज्ञान को बुद्धि में बिठा कर मैं आत्मा उसका मनन चिन्तन कर रही हूँ...* इस दुनिया के कोलाहल से दूर शान्त स्थान पर जाकर मैं आत्मा बैठ गयी हूँ... स्वयं को देह से न्यारा कर आत्मिक स्वरूप में स्थित करती हूँ... कर्मेन्द्रियों से भी न्यारी हो रही हूँ और एक दम हल्कापन महसूस कर रही हूँ... अपने शांत

स्वरूप में मैं आत्मा स्वयं को देख रही हूँ

»» _ »» अपनी इस शांत अवस्था में मैं आत्मा कुछ आवाज़ें सुनती हूँ... पहले ये आवाज़ें थोड़ी धीमी हैं फिर धीरे धीरे ये आवाज़ें तेज़ होने लगती हैं... ये समस्त आवाज़ें मैं अब सुन पा रही हूँ... *ये विश्व की उन सभी आत्माओं की आवाज़ें हैं जो दुखी और परेशान हैं... अपने कष्टों से मुक्त होने के लिए ये आत्माएँ चीख रही हैं, चिल्ला रही हैं...* कुछ आत्माएँ शरीर के रोग से भयंकर दर्द में हैं तो कुछ आत्माएँ मानसिक कष्ट में हैं... कोई संबंधों में धोखा मिलने से दुखी हैं... किसी के अपने प्रिय जन ने शरीर छोड़ा है...

»» _ »» इस तरह असंख्य आत्माएँ अपने अपने दुखों से दुखी हो इन समस्त कष्टों से मुक्ति पाने को चीख पुकार कर रही हैं... *मैं आत्मा इन सबकी ये करुण पुकार सुनकर अपने प्यारे बाबा को याद करती हूँ और बाबा की शक्तिशाली किरणों को स्वयं में भरती हूँ...* बाबा की किरणें मुझमें समा गयी हैं... अब ये किरणें मुझसे निकल कर उन समस्त आत्माओं तक पहुँच रही हैं... और वो आत्माएँ जो अभी तक चीख पुकार कर रही थीं वो ये वाइब्रेशन को कैच कर रही हैं...

»» _ »» मैं आत्मा पाँवरफुल सकाश इन सभी आत्माओं को दे रही हूँ... *सभी दुखी और अशांत आत्माएँ मुझ आत्मा से सकाश को प्राप्त कर अपने दुखों को भूल रही हैं...* उनके कष्ट कम हो रहे हैं और ये समस्त आत्माएँ आश्चर्य से सोच रही हैं कि ये शांति और शक्तियों की किरणें उन्हें कहाँ से मिल रही हैं... आत्माएँ स्वतः ही सहज रूप से मेरी ओर आकर्षित हो रही हैं... और मैं आत्मा उन सभी को निरंतर शक्तिशाली वाइब्रेशन देकर उनके सारे कष्टों से उन्हें मुक्त करती जा रही हूँ...

»» _ »» मैं आत्मा अपने पिता परमात्मा की संतान उनकी हर श्रीमत का पालन करते हुए विश्व परिवर्तन के कार्य में उनकी सहयोगी बन रही हूँ... ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख कर मैं आत्मा उनको फॉलो करते हुए आगे बढ़ रही हूँ... हर आत्मा को सुख और शांति की किरणें दे उनके दुखों को दूर कर रही हूँ... *मनसा वाचा कर्मणा सेवा करते हुए बाबा का राइट हैंड बन मैं आत्मा सेवा

कर रही हूँ...* हृद के संस्कारों और हृद की बातों से ऊपर उठ कर मैं आत्मा रहमदिल बन सर्व को सुख शांति की किरणें देकर उनके दुखों को कम करने में उन्हें मदद कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स जरूर दें ।

ॐ शान्ति ॐ